भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

पाठ : **<u>दिये जल उठे</u>** कार्यपत्रिका की तिथिः ---------- संसाधन व्यक्तिः श्रीमती बीना स्टिफन तिथिः---------- विद्यार्थी का नाम :---------- कक्षा : IX ब		
1.	किस कारण से प्रेरित हो स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया ?	
उ.	सरदार पटेल ने पिछले आंदोलन में स्थानीय कलेक्टर शिलिडी को अहमदाबाद से भगा दिया था । इसी अपमान का बदला लेने के लिए उसने सरदार पटेल को निषेधाज्ञा भंग करने के आरोप में गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया ।	
2.	जज को पटेल की सज़ा के लिए आठ लाइन के फ़ैसले को लिखने में डेढ़ घंटा क्यों लगा ? स्पष्ट करें ।	
उ.	जज को समझ में नहीं आ रहा था कि वह सरदार पटेल को किस धारा के तहत और कितनी सज़ा दे क्योंकि वास्तव में तो पटेल ने किसी कानून का उल्लंघन किया ही नहीं था । वह तो उनपर जबरन थोपा जा रहा था । इसलिए जज को मनगढ़त आरोप मढ़नेवाले आठ लाइन के फैसले को लिखने में डेढ़ घंटा लगा ।	
3.	"मैं चलता हूँ । अब आपकी बारी है ।" – यहाँ उद्धृत पटेल के कथन का आशय पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।	
उ.	सरदार पटेल को निषेधाज्ञा उल्लंघन करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था । यद्यपि निषेधाज्ञा उसी समय लागू की गई थी । अतः उनकी गिरफ्तारी गैरकानूनी थी । अंग्रेज़ सरकार को कोई-न-कोई बहाना बनाकर कांग्रेस के नेताओं को पकड़ना था । इसी सत्य को उद्घाटित करते हुए पटेल ने गाँधी जी से कहा -" मैं चलता हूँ । अब आपकी बारी है ।"अर्थात् मैं तो जेल जा रहा हूँ। मेरे बाद आपको जेल जाने के लिए तैयार रहना चाहिए ।	

4.	"इनसे आप लोग त्याग और हिम्मत सीखें" –गाँधी जी ने यह किसके लिए और किस संदर्भ में कहा ?	
उ.	रास में आयोजित गाँधी जी की सभा में दरबार गोपालदास और रविशंकर महाराज भी उपस्थित थे । वे बड़े रियासतदार होते हुए भी रास में रहकर त्यामय जीवन जी रहे थे । अत: गाँधी जी ने उनके संदर्भ में लोगों से कहा - दरबार समुदाय के ये लोग त्यागी और हिम्मती हैं । आप इनसे त्याग और हिम्मत की शिक्षा लें ।	
5.	पाठ द्वारा यह कैसे सिद्ध होता है कि- 'कैसी भी कठिन परिस्थिति हो उसका सामना तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से किया जा सकता है ।'	
उ.	इस पाठ से सिद्ध होता है कि हर कठिन परिस्थिति को आपसी सूझबूझ और सहयोग से निपटा जा सकता है । वल्लभभाई पटेल की गिरफ्तारी से एक चुनौती सामने आई । गुजरात का सत्याग्रह आंदोलन असफल होता जान पड़ा । किंतु स्वयं गाँधी जी ने आंदोलन की कमान सँभाल ली । यदि ने भी गिरफ्तार कर लिए जाते तो उसके लिए भी उपाय साचा गया । अब्बास तैयबजी नेतृत्व करने के लिए तैयार थे । गाँधी जी को रास से कनकापुर की सभा में जाना था । वहाँ से नदी पार करनी थी । इसके लिए गाँववासियों ने पूरी योजना बनाई । रात ही रात में नदी पार की गई । इसके लिए झोपड़ी, तंबू, नाव, दियों आदि का प्रबंध किया गया । सारा कठिन काम चुटकियों में संपन्न हो गया ।	
6.	महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था ? अपने शब्दों में लिखिए ।	
उ.	महिसागर नदी के दोनों किनारों पर हजारों लोग जमा हो गए थे । उन लोगों के हाथों में जलते हुए दिये थे । परा गाँव और आस-पास से आए लोग दिये की रोशनी लिए गाँधी जी और उनके सत्याग्रहियों का इंतजार कर रहे थे । नदी के दोनों तटों पर लोग एकत्रित थे । चारों और 'महात्मा गाँधी की जय', 'सरदार पटेल की जय' और 'जवाहर लाल नेहरू की जय' के नारे गूँज रहे थे ।	
7.	"यह धर्मयात्रा है । चलकर पूरी करूँगा ।" –गाँधी जी के इस कथन द्वारा उनके किस चारित्रिक गुण का परिचय प्राप्त होता है ?	

उ.	इस कथन द्वारा गाँधी जी की दृढ़ आस्था, सच्ची निष्ठा और वास्तविक कर्तव्य भावना के दर्शन होते हैं । वे किसी भी आंदोलन को धर्म के समान पूज्य मानते थे और उसमें पूरे समर्पण के साथ लगते थे । वे औरों को कष्ट और बलिदान के लिए प्रेरित करके स्वयं सुख-सुविधा भोगने वाले ढोंगी नेता नहीं थे । वे हर जगह त्याग और बलिदान का उदाहरण स्वयं अपने जीवन से देते थे ।	
8.	गाँधी को समझने वाले वरिष्ठ अधिकारी इस बात से सहमत नहीं थे कि गाँधी कोई काम अचानक और चुपके से करेंगे । फिर भी उन्होंने किस डर से और क्या एहतियाती कदम उठाए ?	
उ.	गाँधी जी की दृढ़ निष्ठा, ईमानदारी और चारित्रिक दृढ़ता से बड़े-बड़े सरकारी अधिकारी भी प्रभावित थे । वे जानते थे कि अगर गाँधी नमक कानून तोड़ेंगे तो सबके सामने कहकर तोड़ेंगे । वे चोरी और चुपके-से कोई काम नहीं करेंगे । फिर भी प्रशासन के कुछ लोगों को उन पर संदेह था । दूसरे, उनके मन में आशंका थी कि गाँधी जी के न चाहते हुए भी कानून का उल्लंघन हो गया तो व्यर्थ में संकट खड़ा हो जाएगा । इसलिए सावधानी के लिए उन्होंने नदी के तट पर जमा नमक के भंडार हटवा दिए और उन्हें नष्ट करवा डाला ।	
9.	गाँधी जी के पार उतरने पर भी लोग नदी-तट पर क्यों खड़े रहे ?	
उ.	गाँधी जी महिसागर नदी के पार उतर गए । फिर भी लोग नदी-तट पर इसलिए खड़े रहे ताकि गाँधी जी के पीछे आ रहे सत्याग्रही भी तट तक पहुँच जाएँ और उन्हें दियों का प्रकाश मिल सके ।	